IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

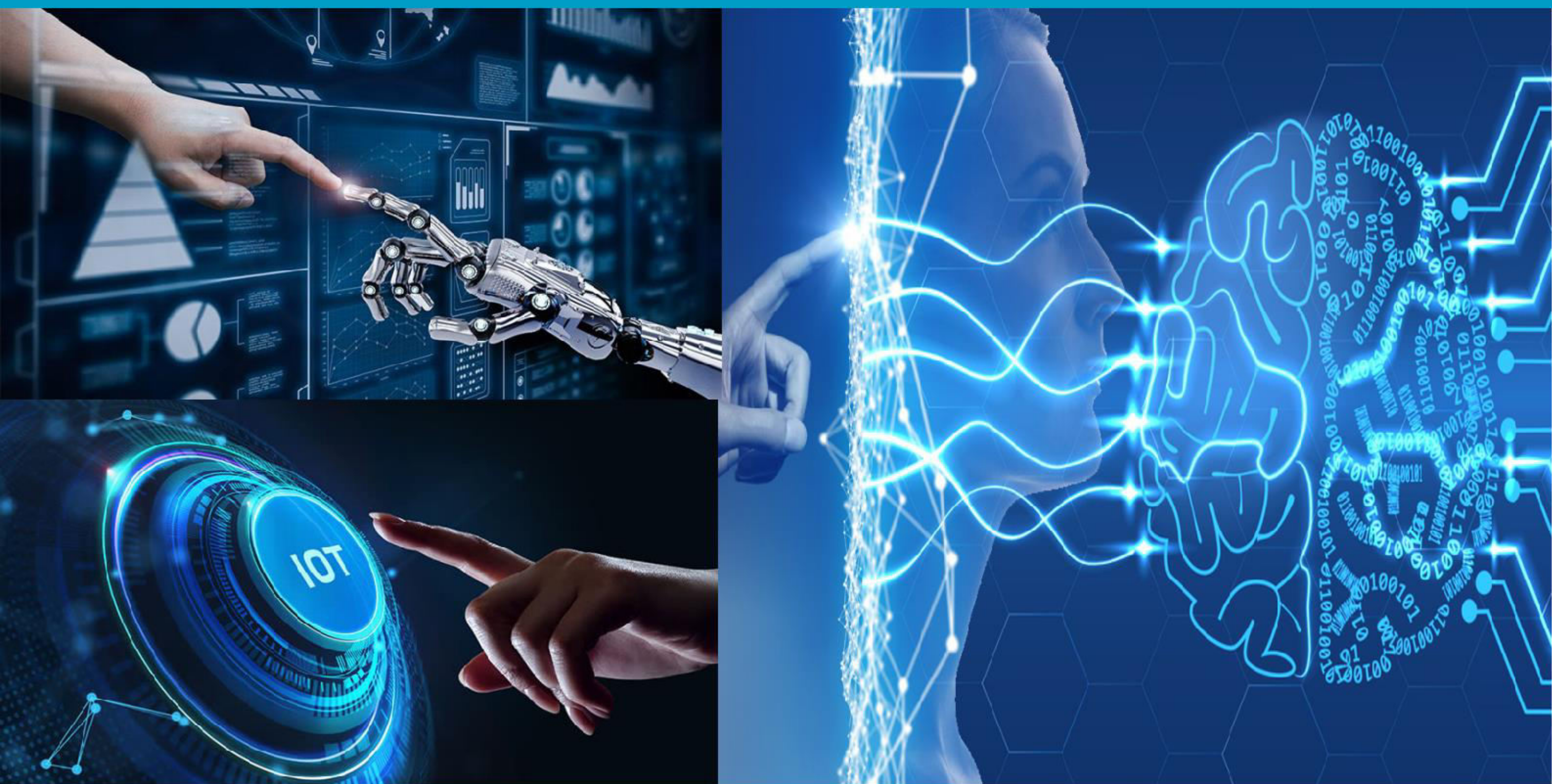

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 10, Issue 2, February 2023

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 7.580

+91 99405 72462 +9163819 07438 ijmrsetm@gmail.com www.ijmrsetm.com

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 2, February 2023|

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1002006 |

जनजातीय महिलायें: प्रस्थिति एवं स्वास्थ्य

Dr. Laxmi Gupta

Associate Professor, Sociology, Govt. Girls College, Dholpur, Rajasthan, India

सार

जनजातीय और कबीलाई स्त्रियों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं आर्थिक और सामाजिक कठिनाइयों से कहीं ज्यादा जटिल हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार जनजातीय इलाकों में महिलाओं को समान जीवन स्थितियां मुहैया कराने के मामले में तेजी से गिरावट आई है। पिछले एक साल में महामारी की वजह से उपजे हालात में आर्थिक मोर्चे पर उन्हें व्यापक क्षति हुई है। नतीजतन, आधी आबादी को अपने जीवन स्तर से समझौता करना पड़ा है। सृजन और जीवन चक्र के बीच की धुरी हैं स्त्रियां। केवल संतति नहीं, एक सेहतमंद समाज की वाहक भी हैं वे। ऐसे में उनका खुद का बदहाल स्वास्थ्य हताशा और कुंठा पैदा करता है। इस आबादी को सबसे ज्यादा स्वास्थ्य संबंधी देखभाल की जरूरत है। आश्चर्यजनक रूप से उन्हें स्वास्थ्य सुविधाओं से दूर रखा जा रहा है। सुदूर वन आच्छादित क्षेत्रों की स्त्रियां आज भी स्वास्थ्य संबंधी बुनियादी सुविधाओं से कोसों दूर हैं।

परिचय

किसी भी समाज का मूल्यांकन इस बात से किया जाता है कि उसमें महिलाओं की स्थिति कैसी है। ये विचार डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के हैं। इसे दुनिया भर में सामाजिक विकास के एक पैमाने के तौर पर देखा जा सकता है। संविधान निर्माताओं ने निश्चित ही आधी आबादी के स्वास्थ्य को विमर्श के केंद्र में रखा। परिणामस्वरूप राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति साकार हो सकी। मगर स्त्री केंद्रित स्वास्थ्य नीति की मौलिक अवधारणा कभी राष्ट्रीय अस्मिता का प्रश्न नहीं बन पाई। जचगी के दौरान इन जनजातीय क्षेत्रों में होने वाली सबसे ज्यादा मौतें इस बात की तस्दीक करती हैं कि चिकित्सा सेवा और जीवन प्रत्याशा के बीच का तालमेल टूटने को है। न्यूनतम स्वास्थ्य सेवाओं के लिए भी उन्हें कबीलाई इलाकों से दूर कस्बों और नजदीकी ठिकानों की ओर दौड़ना पड़ता है। बदहाल स्वास्थ्य सेवाएं न केवल उनकी असमय मृत्यु का कारण बन रही हैं, बल्कि उन्हें मध्यम और हल्की बीमारियों से भी बचाने में नाकाम हैं। यह स्थिति तब है, जब हर साल औसतन 2.23 लाख करोड़ रुपए स्वास्थ्य और चिकित्सीय सुविधाओं पर व्यय किए जाते हैं। मगर इसका लाभ असल लाभार्थियों की पहुंच से लगभग बाहर है।[1]

विकास के आरंभिक चरणों में शिक्षा, स्वास्थ्य और आजीविका को सार्वभौमिक रूप में अंगीकृत किया गया था। बदलते वक्त के साथ प्रगति के पैमाने में आर्थिक तरक्की तो फिट बैठ गई, पर सेहत का ढांचा भरभरा कर गिर गया। इसे केंद्रित करते हुए राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति बनी, ताकि न सिर्फ शहरी, बल्कि बीहड़ों में रहने वाली आदिम आबादी को भी सेहत की सौगात मयस्सर हो। विडंबना है कि सतत विकास प्रक्रिया के क्रमिक चरणों में आदिम स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों की अनदेखी की गई।[2]

जनजातीय और कबीलाई स्त्रियों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं आर्थिक और सामाजिक कठिनाइयों से कहीं ज्यादा दुरूह हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार जनजातीय इलाकों में महिलाओं को समान जीवन स्थितियां मुहैया कराने के मामले में तेजी से गिरावट आई है। पिछले एक साल में महामारी की वजह से उपजे हालात में आर्थिक मोर्चे पर उन्हें व्यापक क्षति हुई है। नतीजतन, आधी आबादी को अपने जीवन स्तर से समझौता करना पड़ा है। पुरुषों के मुकाबले कबीलाई महिलाओं का स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित हुआ है।विभिन्न जनजातीय क्षेत्रों[3], खासकर पश्चिम बंगाल और उससे सटे इलाकों की सेहत संबंधी विस्तृत रिपोर्ट से पता चलता है की 64.2 प्रतशित से अधिक जनजातीय महिलाओं में बीएमआई 18.5 से भी कम है। झारखंड जैसे जनजातीय इलाकों में तो 73 फीसद औसत के मुकाबले 82 प्रतिशत महिलाएं रक्ताल्पता की शिकार हैं। झारखंड और पश्चिम बंगाल में 43 फीसद जनजातीय महिलाएं प्रजनन संबंधी समस्याएं झेल रही हैं। उन्हें न तो उपचार मिल रहा है और न ही परामर्श। मां की खराब सेहत के चलते ज्यादातर बच्चे समय पूर्व पैदा हो रहे हैं।अधिकतर जनजातीय इलाकों में तीन साल से कम उम्र के सत्तावन फीसद बच्चे कम वजन के हैं।[4] सिर्फ अठारह प्रतिशत गर्भवती जनजातीय महिलाएं टिटनेस का टीका ले पाती हैं। सिर्फ बारह फीसद को फोलिक आयरन की गोलियां मिल पाती हैं। उनहत्तर प्रतिशत प्रसव पारंपरिक तरीके से घर पर, चौबीस प्रतिशत रिश्तेदारों और दोस्तों और सात प्रतिशत डॉक्टर या आशा कार्यकर्ता द्वारा कराया जाता है। जल्दी-जल्दी बच्चे होने से मां की सेहत पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। बच्चे भी खतरे में होते हैं। इन इलाकों में ज्यादातर मौतें डायरिया और सांस संबंधी समस्याओं से होती हैं।[5]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 2, February 2023|

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1002006 |

फिलहाल देश में स्वास्थ्य देखभाल का तीन स्तरीय ढांचा है। इसमें निचले स्तर पर गांव या समुदाय स्तर के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र हैं। उसके बाद जिला अस्पतालों के रूप में जिला स्तरीय माध्यमिक स्वास्थ्य सुविधाएं हैं। उसके बाद अत्याधुनिक देखभाल सेवा वाले मुख्य चिकित्सा संस्थानों का स्थान आता है। अगर अस्पतालों में उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं की बात करें, तो जिला अस्पतालों में से अधिकांश में सौ से पांच सौ बिस्तर हैं, जो प्रत्येक जिले में एक लाख से दस लाख नागरिकों के बीच सेवा प्रदान करते हैं। जिला अस्पतालों के लिए भारतीय जनस्वास्थ्य मानक दिशानिर्देश पहली बार 2007 में जारी किए गए थे। फिर 2012 में संशोधित किए गए। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने 2017 में मल्टी स्पेशियलिटी देखभाल के लिए जिला अस्पतालों को मजबूत करने की कोशिश शुरू की, लेकिन यह भी परवान न चढ़ सकी।अगर अस्सी के दशक की बात करें तो कई जिला अस्पतालों को विशेषज्ञता केंद्र माना जाता था, लेकिन बाद के वर्षों में इनकी स्थिति बिगड़ी, क्योंकि वे तकनीकी तरक्की के साथ तालमेल बिठाने में नाकाम रहे। 1990 के दशक के मध्य से स्वास्थ्य सेवाओं के मोर्चे पर सबका ध्यान निजी क्षेत्र में लग गया। इसका सार्वजनिक व्यवस्था पर हानिकारक प्रभाव पड़ा और कई धर्मार्थ अस्पताल अव्यावहारिक हो गए, उन्हें बंद करना पड़ा। मुख्य इलाकों से कटे जनजातीय क्षेत्रों की हालत तो और बिगड़ गई। ज्यादातर जनजातीय महिलाएं झाड़-फूंक या देसी इलाज का सहारा लेती हैं। उनके पास इसके सिवा कोई दूसरा विकल्प नहीं है।राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति में साफ तौर पर जनजातीय समूह की महिलाओं की बुनियादी सेवा की अनिवार्यता की बात कही गई है। उसके बाद बारह राज्यों के सुदूर जनजातीय इलाकों की महिलाओं की सेहत को लेकर एक केंद्रीय योजना समिति गठित की गई। लेकिन नतीजा सिफर रहा। ज्यादातर महिलाएं वनौषधियों पर निर्भर हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्र में इन महिलाओं का प्रदर्शन काफी पीछे है। जाहिर है, यहां चिकित्सा संसाधनों के विस्तार की आवश्यकता है।[6]

उनकी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के हल के लिए चिकित्सालय, चिकित्सक और आधुनिक दवाइयों का प्रबंधन भी जरूरी है। उनके लिए पौष्टिक आहार तथा विटामिन की गोलियों की व्यवस्था की जाए, ताकि उनमें कुपोषण से होने वाली बीमारियों को समाप्त किया जा सके। अमूमन प्रकृति के पूजक ये लोग सामाजिक संपर्क स्थापित करने में खुद को असहज महसूस करते हैं, लिहाजा सामाजिक-सांस्कृतिक अलगाव और अस्पृश्यता की भावना उन्हें पोषण संबंधी सुविधाओं से भी वंचित रखती है।आज भी इन समुदायों का एक बहुत बड़ा वर्ग निरक्षर है। [7]खासकर महिलाएं घोर उपेक्षा, पिछड़ेपन, लैंगिक भेदभाव की शिकार हैं। पितृसत्तात्मक प्रभाव के चलते उनकी शिक्षा को खासा महत्त्व नहीं दिया जाता। समाज में पुरुष वर्ग के मतानुसार स्त्रियां सिर्फ घर का कार्य कर सकती हैं, इसलिए उन्हें केवल बच्चों के लालन-पालन, लकड़ियां बीनने, जानवरों का चारा एकत्रित करने और पशुपालन आदि से जुड़े कामों से ही जोड़े रखा जाता है। निम्नतर सामाजिक स्तर और घोर गरीबी ने उन्हे अंधविश्वास और जादू-टोने की गिरफ्त में ले रखा है।डायन, बिसाही, हिंसा, विस्थापन के सवाल उनके विकास को लगातार प्रभावित कर रहे हैं। महामारी के एक लंबे दौर ने उनकी स्वास्थ्य चिंताओं को और बढ़ा दिया है। चिकित्सीय सुविधाओं से जुड़े समेकित और त्वरित प्रयासों की जरूरत है। आदिवासी महिलाओं में जागृति बढ़ने से उनमें स्वास्थ्य सतर्कता बढ़ेगी। इससे मृत्यु दर में अपेक्षाकृत कमी आएगी। खाकर गर्भवती महिलाओं को बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने में सरकार और संस्थाएं मदद करें। उनकी स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन हो, इसके लिए जनजातीय महिलाओं में गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा सेहत जनजागरण अभियान चलाया जाए। तभी आदिम महिलाएं अपनी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से निजात पा सकेंगी।[8]

विचार-विमर्श

सामाजिक व्यवस्था मानव जीवन की सुसंस्कृत और सभ्य प्रगति का द्योतक है। मानवीय समाज की परिकल्पना में महिला एवं पुरुष दोनों ही समान स्थान पाते हैं। जिनके मध्य अधिकारों , कर्तव्यों , सेवा और समर्पण के सामंजस्य से ही समाज उन्नति की ओर अग्रसर बना रहता है। सामाजिक दूरी को सतत और गतिमान बनाए रखने के लिए किसी एक भी पक्ष को उच्च अथवा निम्न स्तर प्रदान करना सर्वथा अनुचित प्रतीत होता है। भारतवर्ष के संदर्भ में देखा जाए तो यहां संस्कृति , परंपराओं , वेशभूषा , खानपान , रीति - रिवाजों और रहन - सहन की व्यवस्थाओं के बीच दो प्रकार का समाज निवासरत रहता है। पहला जो शहर या शहर के आसपास सुविधाओं से सुसज्जित आधुनिक परिवेश में रहता है , जहां महिला एवं पुरुष के बीच समनता के प्रति जागरूक दृष्टिकोण का भाव रहता है। वहीं दूसरी ओर तकनीकी चकाचौंध से दूर सघन वन क्षेत्रों में अपना जीवन यापन करने वाले लोग , जहां समाज में महिला - पुरुष का सामंजस्य आधुनिक कहे जाने वाले समाज से कहीं श्रेष्ठ प्रतीत होता है।[9] इस समाज में महिलाएं पारिवारिक कार्यों से लेकर आर्थिक गतिविधियों में भी पुरुष का साथ एक कदम आगे बढ़कर देती हैं। यह जनजाति , समाज में महिलाओं के मूलभूत अधिकारों को उन्हें देने की स्वीकृति प्रदान करती है , जो आधुनिक कहे जाने वाले समाज से कहीं ज्यादा श्रेष्ठ है। अपने वर का चयन खुद करना , विधवा विवाह की स्वतंत्रता , पारिवारिक कार्यों में पूर्ण सहयोग इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। मध्यप्रदेश राज्य के झाबुआ जिले और उसके आसपास पाई जाने वाली भील जनजाति वर्ग की महिलाओं

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 2, February 2023|

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1002006 |

के सामाजिक व आर्थिक पक्ष को उद्घृत करते हुए उन्हें वर्तमान की आधुनिक उन्नत, आर्थिक व शैक्षणिक रूप से संपन्न धारा में लाने के लिए किए जाने वाले उपाय व सार्थक प्रयास ही इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है, जिससे उनकी पूरा संस्कृति के संरक्षण के साथ ही उनकी हस्त कला को व्यावसायिक स्तर प्राप्त हो सके।[10]

समाज व्यवस्था मानव जीवन की चिरंतर और शाश्वत आधारशिला है। बगैर समाज व्यवस्था के हम सुसंस्कृत और सभ्य समाज की कल्पना ही नहीं कर सकते हैं। व्यवस्था का आशय एक संरचना के अंतर्गत एकाधिक निर्माणक इकाइयों या तत्वों की उस निश्चित प्रतिमानात्मक सम्बद्धता से है, जो कि एक प्रकार्यात्मक संबंध के आधार पर उन इकाइयों को एक सूत्र में बांधती है तथा उन्हें क्रियाशील व गतिशील करती है।[11]
मार्शल जोन्स ने व्यवस्था के संबंध में लिखा है कि सामाजिक व्यवस्था वह स्थिति है, जिनमें कि समाज की विभिन्न क्रियाशील इकाइयां आपस में तथा समग्र समाज के साथ एक अपूर्ण ढंग से संबंधित होती है। मानवीय समाज की व्यवस्था महिला और पुरुष दो धुरियों पर टिकी होती है, जिसके बीच बनने वाले सामंजस्य से ही परिवार संतुलित प्रगति की ओर गतिमान होता है। इनमें से किसी को भी अनदेखा किया जाए तो सामाजिक व्यवस्था अस्थिर सी प्रतीत होती है।[12]
आदिकाल से ही भारतीय समाज पुरुष प्रधान रहा है, जिसके बाद भी महिलाओं ने अपनी पहचान हर युग में बनाई है और अपनी उपस्थिति का आभास कराया है। वैदिक युगों में अपाला घोष जैसी विदुषियों ने अपने आप को अमृत्व प्रदान किया। तदोपरान्त गौतमी पुत्र सातकर्णी ने अपने नाम के आगे माता का नाम जोड़कर मातृ पूजा का संकेत दिया है। शिवाजी को इतना सफल व्यक्तित्व प्रदान करने में उनकी माता जीजाबाई का अहम योगदान है।[13]
आज तकनीकी युग और इस आधुनिक समाज में जहां एक ओर महिलाएं पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपनी पहचान बनाने में सफल रही हैं वहीं दूसरी ओर मध्यभारत जिसे जनजातियों का घर भी कहा जाता है, जिसमें महिलाओं का अपना विशिष्ट स्थान है। अंत: प्रस्तुत शोधपत्र में भील समाज में महिलाओं की स्थिति और उनकी समस्याओं के लिए सकारात्मक सुझावों को प्रस्तुत किया गया है।
झाबुआ जिले में निवासरत ग्रामों में भीली जनजाति के अलावा अन्य जनजातियां भी निवास करती हैं। इनके लिए घर प्राय: रैन-बसेरा ही होता है। दिन में उनकी अधिकांश क्रियाएं प्राय: घर के बाहर ही सम्पन्न होती है। घास-फूस द्वारा बनाए गए मकानों की छत ढालू होती है। समय-समय पर घर की दीवारों को गोबर या चूने से पोता जाता है। घर के आंगन में मकान से सटाकर एक ओर पशुओं को रखने का स्थान होता है। संपूर्ण घर के क्रियाकलाप महिलाओं द्वारा ही संभाले जाते हैं। स्त्रियां घाघरा चोली और चुंदड़ी या साड़ी पोलका पहनती है। आभूषणों में मुख्यत: हाथों में चूड़ी, नाक में नाथड़ी-कांटा, पायल, वाकला, चुड़ा, पैर में बिछिया, कमर में करदौना आदि अनेक आभूषण पहनती हैं। गुदना गुदवाना इनका प्रमुख आभूषण माना जाता है। गुदना ऐसा अलंकरण है जो कि बिना किसी अतिरिक्त भार के दैनिक जीवन में भी व्यक्ति को सजा-संवरा बनाए रखता है।[14]

गेहूं, मक्का, बाजरा, दाल, चावल वहीं मांसाहार में बकरा, मुर्गा, भेड़, मछली और विभिन्न प्रकार के पक्षियों का मांस खाया जाता है। अभाव में जीवन यापन करने वाले जनजातिय महिलाएं गेहूं को मोटा पीसकर शक्कर या गुड़ के साथ पानी डालकर पकाती हैं। यहां विवाह में शराब अनिवार्य होती है। महिलाएं त्योहार पर खुशी से शराब का सेवन कर झूमती हैं। ये महिलाएं धूम्रपान की भी शौकिन होती हैं। तम्बाकू को चिलम और हुक्के में भरकर पीने का प्रचलन भी इन महिलाओं में देखने को मिलता है। अतिथि को बीड़ी पिलाना आतिथ्य का सूचक है।[15]

भील महिलाएं अत्यंत श्रम करने वाली होती हैं। ये कृषि कार्य में पुरुषों का हाथ बटाती हैं। पशुओं को जंगल में जाकर चराना व दूध दुहना इनके दैनिक कार्य है। मजदूरी करना कंडे (उपले) बेचना, जंगलों में रोटी बांधकर ले जाना, चुल्हा जलाने के लिए लकड़ियां इक्ट्ठी करना आदि कार्य महिलाएं ही करती हैं। इनकी आर्थिक स्थिति अत्यंत ही कमजोर होती है। पुरुषों के साथ भील स्त्रियां कंधे से कंधा मिलाकर काम करती हैं, उनका यही श्रम उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करता है। चाहे कितना ही सभ्य समाज हो महिलाओं को नौकरी करने का अधिकार स्वेच्छा से नहीं देता किन्तु भील समाज में यह कुरीति देखने को नहीं मिलती और महिलाएं स्वतंत्र रूप से काम करती हैं।[16]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 2, February 2023|

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1002006 |

परिणाम

जन्म

लड़की के जन्म के समय लड़के की अपेक्षा ज्यादा खुशियां मनाई जाती हैं। इन्हें आर्थिक सुरक्षा का प्रतीक समझा जाता है। परंपरागत रूप से इस समुदाय में लड़कियों की अधिक संख्या परिवार की उच्च स्थिति की प्रतीक समझी जाती है। जन्म के उपरांत खूब गाना बजाना किया जाता है और सामूहिक दावत दी जाती है। ईश्वर का आशीर्वाद समझकर धन्यवाद दिया जाता है व पूजा अर्चना की जाती है।[17]

विवाह

बालिकाओं को विवाह के पूर्व अपना जीवनसाथी स्वयं चुनने का अधिकार दिया जाता है। इस जनजाति में बालिकाओं का विवाह 12 से 15 साल की उम्र में कर दिया जाता है। वहीं वधू मूल्य विवाह में अनिवार्य होता है। वधू मूल्य वह राशि होती है जो विवाह के समय वर पक्ष द्वारा वधू के अभिभावकों को दी जाती है। वधू मूल्य को इस जनजाति में दापा कहते हैं। कुछ लोग इसे देज भी कहते हैं। वधू पक्ष अपनी स्वेच्छानुसार वर पक्ष को दायजा देता है। भील जानजाति में विधवाओं और परित्यक्ताओं को पुनर्विवाह करने की अनुमति प्राप्त है। प्रसिद्ध भगोरिया पर्व अपनी पसंद का लड़का ढूंढने का सबसे अच्छा माध्यम है। अत: यह कहना गलत न होगा कि परिणय के परिप्रेक्ष्य में भगोरिया हाट भील आदिवासी संस्कृति की विशिष्टता है और यह अन्य समाजों की तुलना में खुली मानसिकता का प्रतीक भी है।[18]

मृत्यु

भील जनजाति में मृत्यु के समय पुरुषों और महिलाओं का एक ही रीति से दाह संस्कार किया जाता है। इनमें शव को जलाया जाता है। चेचक अथवा किसी संक्रामक रोग से मृत्यु होने पर प्राय: मृतक को दफनाया जाता है। मृत्यु की सूचना विशिष्ट ताल में ढोल बजाकर दी जाती है। दाह संस्कार की रीत वही है जो कि अन्य समाज में प्रचलित है।

धार्मिक जीवन

भील महिलाएं अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति की होती हैं। शिक्षित न होने के कारण इनमें रूढ़िवादिता देखने को मिलती है। घर परिवार की सुख समृद्धि के लिए या बीमारी से निजात पाने के लिए ये महिलाएं कठिन से कठिन तप करने को तैयार हो जाती हैं। आज भी ये महिलाएं समस्त उपवासों को विधि विधान से करती हैं।[19]

लोक कलाएं

नृत्य गीत नौटंकिया इस समाज के अभिन्न पहलू हैं, जिनमें महिलाएं बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती हैं। जैसे वारया नृत्य , नेजा नृत्य, मवरी नृत्य, भूड़ा नृत्य, यावजा गीत, डावण गीत, लावणी गीत, भित्ती लोक चित्रकला, अल्पना, गांठना एवं अन्य अनेक कलाएं हैं। हाथ से बनाए जाने वाले आभूषण, मिट्टी के बर्तन पिथौरा अन्य आकर्षक सजाने वाली वस्तुएं एकाएक आकर्षिक करती हैं। अत: महिलाएं इन सबको बनाने में पारंगत होती हैं और कई महिलाएं तो इन हस्तशिल्पों का उपयोग व्यवसाय के रूप में भी करती हैं।

शिक्षण

भील महिलाओं की शिक्षा का स्तर काफी कम है। आज इसी स्तर के परिणाम स्वरूप हमें रूढ़िवादिता और अस्वस्थ्यता देखने को मिलती है। जागरुकता की कमी व मृत्युदर में बढ़ोतरी का एकमात्र कारण अशिक्षा ही है।

परिवर्तन

बाह्य संपर्क, शिक्षण, संचार तथा यातायात के साधनों के कारण बाह्य दुनिया के प्रभाव में ये महिलाएं तेजी से आ रही हैं। इनके रहन सहन, वस्त्र विन्यास, खानपान, शिक्षण, कृषि आदि के क्षेत्रों में काफी परिवर्तन आया है। परंपरागत लोक कलाएं, रीति-रिवाज धीरे-धीरे लुप्त होते जा रहे हैं। फलस्वरुप संस्कृति का क्षरण हो रहा है।[20]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 2, February 2023|

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1002006 |

समस्याएं

भील समाज में महिलाएं परिवार के सभी महत्वपूर्ण उत्तरदायित्वों का निर्वहन सुचारू रुप से करती हैं। जीवन की हर डगर पर पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती हैं परंतु फिर भी वह पुरुषों की दासी ही मानी जाती हैं। आज भी परिवारों में महिलाओं की स्थिति निम्नतर बनी हुई है। आज भी उसे पुरुष की अवमानना झेलनी पड़ती है। सरकार द्वारा चलाई जा रहीं अनेक योजनाओं जिसका उद्देश्य महिलाओं के जीवनस्तर में सुधार करना होता है, के बावजूद महिलाओं में जागरुकता की कमी है। शिक्षित न होने के कारण वे अपने अधिकारों से अवगत नहीं हो पातीं। इनके जीवनस्तर में सुधार के लिए अनेक एनजीओ चलाए जा रहे हैं। जोकि सुधार के नाम पर सरकार से व्यापक धन तो ले लेते हैं लेकिन इन योजनाओं का उचित क्रियान्वयन नहीं कर पाते। बेरोजगारी और आर्थिक तंगी के साथ-साथ शिशु मृत्यु पर उचित नियंत्रण न हो पाना भी एक विकट समस्या है।

आदिवासी महिलाओं को ध्यान में रखकर उनकी वर्तमान स्थिति को संवारने के लिए अनेक योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। उनकी सामाजिक स्थिति पर अनेक विद्वानों द्वारा शोध भी किए जा चुके हैं। अनेक समाजसेवी संस्थाएं इनके स्तर को सुधारने का प्रयास कर रही हैं। फिर भी हमारे सामने अपेक्षित परिणाम नहीं आ पा रहे हैं, आखिर क्यों[21]

निष्कर्ष

भीली महिलाओं की वर्तमान सामाजिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए और उनके अपेक्षित विकास के लिए हमें स्थानीय स्तर पर प्रयास करने चाहिए। मैंने अपने शोध के दौरान उनकी समस्याओं से निजात दिलाने के लिए कुछ उपाय सुझाए हैं। जैसे- बालिका शिक्षा के लिए अभिभावकों को जागरूक किया जाए। शासन द्वारा प्रत्येक स्तर पर शिक्षा हेतु जागरुकता अभियान चलाए जाएं। आंगनवाड़ी को प्राथमिक शिक्षा के समांतर ही रखा जाए, अर्थात अधिक से अधिक संख्या में बालिकाओं को आंगनवाड़ी भेजा जाए। महिलाओं को घर में ही स्थायी स्तर पर रोजगार दिलवाने के लिए पंरपरागत उद्योगों को स्थायी बाजार दिया जाए। जिससे यह महिलाएं हस्त शिल्प बनाकर सीधे व्यापार कर सकें। स्वास्थ्य आदि के परीक्षण हेतु प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर महिला चिकित्सक की नियुक्ति की जानी चाहिए। वहीं उनके द्वारा ग्रामीण इलाकों में शिविर लगाकर महिलाओं के स्वास्थ्य का परीक्षण किया जाना चाहिए। कुपोषण और शिशु मृत्युदर को कम करने के लिए नियमित रूप से स्वास्थ्य की जांच होनी चाहिए। उन्हीं महिलाओं में से किसी एक को, जोकि शिक्षित हो, पारिश्रमिक देकर नियुक्त किया जाना चाहिए। जोकि समय-समय पर जांच व योजनाओं की जानकारी से महिलाओं को अवगत करा सके। साथ ही एनजीओ की सहायता से कार्य का निरीक्षण भी कराया जाना चाहिए। ऐसी व्यवस्थाएं इन महिलाओं के लिए की जानी चाहिए। 20

निष्कर्ष के रुप में हम यह कह सकते हैं कि आधुनिक व पढ़े लिखे समाज की तुलना में भीली जनजाती की महिलाओं की स्थिति अधिकारों के संदर्भ में ज्यादा अच्छी है। इन्हें स्वयं का वर चुनना, विधवा परित्यक्ता, विवाह कार्य करने की स्वतंत्रता आदि अधिकार प्राप्त हैं। वहीं दूसरी ओर अशिक्षा इनके लिए बड़ा अभिशाप बनता जा रहा है। इस कारण इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं हो पा रही है। मेरे शोध का यही उद्देश्य है कि सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं व एनजीओ का क्रियान्वयन सुचारु रुप से हो। जिससे अपेक्षाकृत परिणाम सामने लाए जा सकें। ऐसे शोध किए जाएं जिनके उपयोगी परिणाम के साथ उनके समस्याओं के निराकरण हेतु कोई भी कार्य निष्पक्षता से किया जाए व परिणाम सुधार परख हो। जिससे इनके जीवन स्तर को सुधारा जा सके। 21

संदर्भ

1) वर्मा एमएल-भीलों की सामाजिक व्यवस्था, निंकुज प्रकाशन बड़वानी 1995

2) पाटिल अशोक डी- भील जनजीवन और संस्कृति, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ एकादमी, 1998

3) जोशी श्रीमति पारुल- बुलेटिन, आदिम जाति अनुसंधान संस्थान भोपाल 1997

4) शर्मा ब्रह्मदेव-आदिवासी विकास एवं सैद्घांतिक विवेचन, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ एकादमी 1980

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 2, February 2023|

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1002006 |

5) झाबुआ - गजेटियर मध्यप्रदेश 2001

6) राणा प्रशांत कुमार - भील जनजाती परंपराओं का समीक्षात्मक अध्ययन, शोध ग्रंथ, विक्रम विश्वविद्यालय, 2002

7) आदिवासी का धर्म कोनसा है
8) केरल के वायंड की एक आदिवासी कालोनी का वीडियो
9) उड़ीसा के आदिवासी
10) सरना - ए केस-स्टडी इन रीलिजन मुंडा आदिवासियों के धर्म पर एक आलेख
11) वनवासी कल्याण परिषद एक निजी संस्थान का जालघर
12) वनवासी कल्याण आश्रम आदिवासियों के लिए हिन्दू संस्थानों द्वारा चलाया जा रहा एक कार्यक्रम के बारे में
13) आदिवासी मुन्नेत्र संगल गुडालूर दक्षिण भारत के जंगलों में एक आदिवासी गाँव के आत्म-निर्भर होने की कथा
14) आदिवासी संयोजन समूह -जर्मनी में
15) पत्रिका इंडिया टुगेदर पर आदिवासियों का खास पृष्ठ
16) कामत डाट काम पर आदिवासियों की तस्वीरें
17) उड़ीसा के आदिवासियों के संगीत के बारे में एक जालस्थल पर
18) आदिवासी साहित्य यात्रा (गूगल पुस्तक ; लेखिका - रमणिका गुप्ता)
19) भारत में निवास करनेवाले आदिवासी समुदायों की राज्यवार सूची देखें।
20) भारत के आदिम आदिवासियों की राज्यवार सूची देखें।
21) भारत में राज्यवार आदिवासी आबादी का प्रतिशत देखें।

INNO SPACE

SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor:
7.580

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL
OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com